Ñfr % fo'knpkfj=k 'kqf)fo èkku
Ñfrdkj % i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'kn lkxj th egkjkt
laLdj.k % izFke&2014 * izfr;k¡ %1000
ladyu % eqfu Jh 108 fo'kky lkxj th egkjkt
lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkse lkxj th egkjkt
laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ vkLFkk nhnh] liuk nhnh
la;kstu % lksuw nhnh] fdj.k nhnh] vkjrh nhnh] mek nhnh
lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155
izkfIr LFkku % 1- tSu ljkoj lfefr] fueZy dqekj xksèkk]
2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu%0141&2319907 ¼?kj½ eks- %9414812008
2- Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cq/kok fogkj] vyoj] eks- %9414016566
3- fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879
4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j ykycÙkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971
ewY; % 25@&#- ek=k

eqnzd % ikjl izdk'ku] fnYyh Qksu ua- %09811374961] 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com

''चारित्र शुद्धि व्रत से होगा चारित्र में लगे दोषों का निराकरण''

पाँच महाव्रत पाँच समीति तीन गुप्ति के भेद से चारित्र के तेरह भेद हैं। चारित्र में लगे दोषों के प्रायश्चित स्वरूप चारित्र शुद्धि व्रत किया जाता है। चारित्र को शुद्ध रखने के लिए चारित्र शुद्धि व्रत में सब मिलाकर एक हजार दो सौ चौंतीस उपवास कहे हैं तथा इतनी ही पारणाएँ कहीं गई हैं। इस व्रत में छह वर्ष दश माह आठ दिन लगते हैं। इन 1234 व्रत को करने की परम्परा उपवास या अल्पाहार आदि से मुनियों में आर्यिकाओं में तो है ही श्रावक श्राविकाओं में भी प्रचलित है। **विशेष**–चारित्र शुद्धि के व्रतों की संख्या का क्रम इस प्रकार है–

अहिंसा महाव्रत	14×9	= 126
सत्य महाव्रत	8×9	= 72
अचौर्य महाव्रत	8×9	= 72
ब्रह्मचर्य महाव्रत	20×9	= 180
अपरिग्रह महाव्रत	1×9=9+1	= 10
कुल व्रतों की जोड़		= 676

ईर्या समिति	1×9	=	9
भाषा समिति	10×9	=	90
एषणा समिति	46×9	=	414
आदान निक्षपेण समिति	1×9	=	9
प्रतिष्ठापना समिति	1×9	=	9
मनोगुप्ति	1×9	=	9
वचनगुप्ति	1×9	=	9
कायगुप्ति	1×9	=	9
व्रतों की कुल संख्या=			1234

इस प्रकार 1234 उपवास व इतने ही पारणे होते है। कदाचित ऐसी शक्ति न हो तो बीच बीच में भी व्रतोपवास किये जा सकते है और 25–30 वर्ष में समाप्त किये जा सकते है पर व्रतों की संख्या कुल 1234 होनी चाहिए। जो इस व्रत को निरतिचार पालन करते है उनके 13 प्रकार का निर्मल चारित्र पलता है। और कालान्तर में उत्तमोत्तम सुखों को पाकर मोक्ष पद जैसे पद को प्राप्त करते है।

चारित्र शुद्धि के व्रत करने वालों को व्रतों के दिनों में चारित्र शुद्धि पूजा एवं उद्यापन पर वृहद स्तर पर **परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** द्वारा रचित यह चारित्र शुद्धि विधान करना चाहिए।

आशा है चारित्र शुद्धि व्रत करने वालों को यह कृति विशेष लाभकारी होगी पुन: आचार्य श्री के श्री चरणों में त्रिभक्तिपूर्वक नमोस्तु करते हुए भावना भाते है कि आगे भी आप इसी तरह जिनवाणी की सेवा में संलग्न रहे और कालान्तर में भव्य जीवों का कल्याण करते हुए आप भी केवलज्ञान लक्ष्मी को प्राप्त करे।

संकलन–मुनि विशाल सागर
जैनपुरी रेवाड़ी

श्री नवदेवता पूजा

(स्थापना)

हे! लोक पूज्य अरिहंत नमन्, हे! कर्म विनाशक सिद्ध नमन्।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन॥
हे! सर्व साधु है तुम्हें नमन्, हे! जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन॥
नव देव जगत! में पूज्य ‘विशद’, है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(घत्ता छन्द)

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।
शांतये शांति धारा
ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य—ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा) मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई॥
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...

(दोहा) नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें॥

इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चारित्र शुद्धि विधान

मंगलाचरण

जिन अर्हत् मंगल करें, मंगल सिद्ध महान।
आचार्योपाध्याय साधु सब, मंगल हैं गुणवान॥
मंगलमय जिनधर्म है, जिनवाणी शुभकार।
मंगलमय जिनबिम्ब हैं, जिनग्रह मंगलकार॥1॥

चौबोला छन्द

मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, कहलाए नव देव प्रधान।
शरण प्राप्त जो करते इनकी, उनका जीवन बने महान॥
निकट भव्य प्राणी इस जग में, करते जो इनमें श्रद्धान।
तन चेतन का भेद ज्ञानकर, पा लेते हैं सम्यक् ज्ञान॥2॥
पावन पंच महाव्रत गाए, पंच समितियाँ मंगलकार।
तीन गुप्तियाँ श्रेष्ठ लोक में, तेरह विध चारित शुभकार॥
निरतिचार चारित के पालन, से होता चारित्र विशुद्ध।
काल अनादी मलिन आत्मा, हो जाती है जिससे शुद्ध॥3॥
चारित शुद्धी है विधान शुभ, मंगलमय मंगलकारी।
पालन करते भव्य जीव जो, होकर के नितअविकारी॥
कर्म निर्जरा के द्वारा नर, कर देते हैं कर्म विनाश।
अल्प समय में केवलज्ञानी, होकर करते ज्ञान प्रकाश॥4॥
तेरह विध चारित के होते, बारह सौ चौंतिस उपवास।
विधी पूर्वक व्रत करने से, हो जाती है पूरी आस॥
रहे अहिंसादी व्रत के सब, छह सौ छियासठ शुभ उपवास।
रात्रि भोजन त्याग सुव्रत के, दश उपवास बताए खास॥5॥
ईर्यादिक पाँचों समिति के, पाँच सौ इकतिस हैं उपवास।
सत्ताइस उपवास पालते, त्रय गुप्ती को धर उल्लास।
इस प्रकार चारित शुद्धी के, व्रत का पालन जैन ॠशीष।
'विशद' भाव से करने वाले, बनते मुक्ती पद के ईश॥6॥
(इत्याशीर्वाद)

विधान पूजन प्रारम्भ

श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठी पूजन

स्थापना

चार घातिया कर्म विनाशी, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, अर्हत् तीनों लोक महान॥
सर्व कर्म के नाशी पावन, सिद्ध शिला पर करते वास।
सिद्ध प्रभू के चरण कमल में, भक्त खड़े हैं ले अरदास॥
विशद हृदय के सिंहासन पर, तिष्ठो आकर हे भगवान!
पुष्पाञ्जलि हाथों में लेकर, भाव सहित करते आह्वान॥

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठी अत्र अवतर अवतर संवौषट इति आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठी अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोला छन्द)

प्रासुक नीर सुगंधित लेकर, जिन पद पूजा को आए।
जन्म जरादिक रोग नाश हो, नाथ भावना यह भाए॥
श्री अरहंत सिद्ध जिन स्वामी, सच्चारित का फल पाए।
जिनकी पूजा अर्चा करते, चारित्र शुद्धी हो जाए॥1॥

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर चन्दन आदि सुगन्धित, गंध बनाकर के लाए।
भव आताप नशाने को यह, नाथ शरण में हम आए॥
श्री अरहंत सिद्ध जिन स्वामी, सच्चारित का फल पाए।
जिनकी पूजा अर्चा करते, चारित्र शुद्धी हो जाए॥2॥

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सुगन्धित अक्षय अक्षत, पूजा करने को लाए।
अक्षय पद पाने हे स्वामी! चरण शरण में हम आए॥
श्री अरहंत सिद्ध जिन स्वामी, सच्चारित का फल पाए।
जिनकी पूजा अर्चा करते, चारित्र शुद्धी हो जाए॥3॥

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प थाल में भरके, पूजा करने लाए हैं।
काम रोग को हरने स्वामी, चरण शरण में आए हैं॥
श्री अरहंत सिद्ध जिन स्वामी, सच्चारित का फल पाए।
जिनकी पूजा अर्चा करते, चारित्र शुद्धी हो जाए॥4॥

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृत खण्ड राशि सम सुन्दर, यह नैवेद्य बनाए हैं।
क्षुधा रोग के नाशन को हम, अर्चा करने लाए हैं॥
श्री अरहंत सिद्ध जिन स्वामी, सच्चारित का फल पाए।
जिनकी पूजा अर्चा करते, चारित्र शुद्धी हो जाए॥5॥

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर के हरने को हम, पावन दीप जलाए हैं।
विशद ज्ञान हो प्रकट शीघ्र ही, यही भावना भाए हैं।
श्री अरहंत सिद्ध जिन स्वामी, सच्चारित का फल पाए।
जिनकी पूजा अर्चा करते, चारित्र शुद्धी हो जाए॥6॥

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्म नाश को, सुरभित धूप जलाते हैं।
मुक्ती प्राप्त हमें हो स्वामी, विशद भावना भाते हैं।
श्री अरहंत सिद्ध जिन स्वामी, सच्चारित का फल पाए।
जिनकी पूजा अर्चा करते, चारित्र शुद्धी हो जाए॥7॥

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे श्रेष्ठ सरस फल लेकर, हम पूजा को आए हैं।
मोक्ष महाफल पाने के शुभ, हमने भाव बनाए हैं।।
श्री अरहंत सिद्ध जिन स्वामी, सच्चारित का फल पाए।
जिनकी पूजा अर्चा करते, चारित्र शुद्धी हो जाए।।8।।

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत आदिक से, पावन अर्घ्य बनाए हैं।
पद अनर्घ पाने हे स्वामी!, शरण आपकी आए हैं।
श्री अरहंत सिद्ध जिन स्वामी, सच्चारित का फल पाए।
जिनकी पूजा अर्चा करते, चारित्र शुद्धी हो जाए।।9।।

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांती धारा से मिले, मन में शांति अपार।
अतः चरण में आपके, देते शांती धार।।
।।शान्तये शान्तिधारा।।

चुनकर लाए पुष्प यह, पुष्पाञ्जलि को नाथ।
मुक्ती हो संसार से, झुका चरण में माथ।।
।।दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– अरिनाशक अरिहंत हैं, सिद्धशिला पर सिद्ध।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, जिन के जगत प्रसिद्ध।।
(इति प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अरिनाशक अरिहंत कहाए, प्राप्त करें जो केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, तीन लोक में रहे महान।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण पा, करते निज आतम का ध्यान।

वीतराग विज्ञान के धारी, होते हैं अति महिमावान।।
निरतिचार चारित्र पालते, कर्म निर्जरा करें विशेष।
श्री अरहंत सकल परमातम, कहलाते हैं जिन तीर्थेश।।1।।

ॐ ह्रीं अनंत चतुष्टय गुण प्राप्ताय सर्वघाति कर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धालय में सिद्ध कहे हैं, ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप।
निर्विकार निर्द्वन्द सुनिर्मल, निराधार चेतन चित् रूप।।
शुद्ध बुद्ध ज्ञायक अशरीरी, शाश्वत स्वाश्रित वसु गुणवान।
केवल दर्शन ज्ञान अगुरुलघु, अवगाहन सम्यक्त्व प्रधान।।
अव्याबाध सूक्ष्मत्व सुगुण शुभ, गुण वीर्यत्व रहा शुभकार।
नित्य निरंजन निराकार जिन, अविकारी हैं मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सकल निकल परमातम द्वय विध, पूज्य कहे त्रैलोकीनाथ।
सुर नर मुनि गणधर विद्याधर, जिनके चरण झुकाते माथ।।
सम्यक् चारित का पालन कर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
तीन लोक में पूज्य सुपद शुभ, पाते अर्हत् सिद्ध महान।।
पाँचों ही चारित्र पालकर, पञ्चम गति में करते वास।
शरणागत जो अर्चा करते, उनकी होती पूरी आस।।

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– बनते अर्हत-सिद्ध हैं, सम्यक् चारित्र धार।
जयमाला गाते यहाँ, जिनकी मंगलकार।।

(छन्द पद्धड़ि)

तुमने करण त्रय हृदय धार, मिथ्या मल पर कीन्हा प्रहार।
संशय विमोह विभ्रम विनाश, सम्यक्त्व सुरवि कीन्हा प्रकाश।।

तन चेतन का कर भेद ज्ञान, प्रगटाई आतम रुचि प्रधान।
जग विभव विभाव असार जान, स्वातम सुख को ही नित्य मान॥
अतिशय अनुपम चारित्र धार, तन मन से होके निर्विकार।
धारण करके निर्ग्रन्थ रूप, होके एकाग्र ध्याया स्वरूप॥
द्वय बीस परीषह जो प्रधान, उपसर्ग आदि सहके महान।
धारण कर गुप्ति समीति योग, चिन्तन अनुप्रेक्षा कर मनोग॥
तुम मोह शत्रु पर कर प्रहार, संवर कीन्हा नाना प्रकार।
तप अनशन आदि बाह्य धार, अपनी इच्छाओं को सम्हार॥
छह अभ्यंतर तप कर महान, निज शुद्धातम का किया ध्यान।
एकाकी निर्भय निस्सहाय, एकान्त ध्यान का कर उपाय॥
कर्मों का संवर किये नाथ, अविपाक निर्जरा किए साथ।
अनन्तानुबन्धी चउ कषाय, विसंयोजन का कीन्हा उपाय॥
फिर क्षायिक श्रेणी आप धार, घाती कर्मों पर कर प्रहार।
चारों कर्मों का कर विनाश, कैवल्य ज्ञान कीन्हा प्रकाश॥
नव केवल लब्धी आप धार, नर भव का पाए श्रेष्ठ सार।
कर आप सूक्ष्म प्रतिपाति ध्यान, चारों अघातिया कर समान॥
अन्तर्मुहूर्त में धार योग, बन जाते हैं केवलि अयोग।
करके अघातिया कर्म नाश, शिवपुर में कीन्हें आप वास॥
फिर प्रगटाए निज का स्वरूप, आनन्द प्राप्त कीन्हे अनूप।
अक्षय अनन्त निज सुगुण धार, अविनाशी गुण पाए अपार॥
शुभ स्वाश्रित सुख पाए विशेष, निज गुण प्रगटाए हैं जिनेश।
त्रय लोक शरण अघहर महान, हे नाथ! आप गुण के निधान॥
हे महातीर्थ! मंगल स्वरूप, तुम सर्वोत्तम जग में अनूप।
तुम समयसार के मूल ज्ञेय, हो सर्व तत्त्व में उपादेय॥
संसार महासागर अपार, भवि जीवों को आनन्द कार।
हे भवसागर! में तरणहार, निज में रहते हो निराकार॥
हे पूज्यवाद! तव चरण राज, हैं भव सागर में तारण जहाज।
हे सिद्ध प्रभू! हे निराधार, तव पद में वंदन बार-बार॥
दोहा– कहे सकल परमात्मा, श्री अरहन्त महान।
निकल सिद्ध जिनका विशद, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं चारित्र फल स्वामी श्री अरहंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्ती कर भगवान की, बने पुण्य के कोष।
ज्ञान ध्यान तप से बने, जीवन यह निर्दोष॥

(इत्याशीर्वाद)

चारित्र धारक आचार्योपाध्याय साधु परमेष्ठी पूजा

स्थापना

आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, सम्यक् चारित के धारी।
सर्व असंयम तजने वाले, होते जग में अविकारी॥
पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विधि चारित्र कहा।
पावन यह चारित्र धारना, मेरा भी शुभ लक्ष्य रहा॥
सम्यक् चारित धारी ऋषिपद, करते हम शत्‌शत् वन्दन।
विशद भाव से हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

प्रासुक जल भरकर ले झारी, समता हृदय समाये हैं।
जन्म जरा अरु मृत्यु रोग वसु, कर्म नशाने आये हैं॥
आचार्योपाध्याय सर्व साधु की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु हम, सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम केशर अरु चंदन ले, गुरु के चरण चढ़ाए हैं।
भव संताप नशाने हेतू, हर्ष-हर्ष गुण गाए हैं॥

आचार्योपाध्याय सर्व साधु की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठिभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अमल धवल तन्दुल ले, भाव सजाकर लाए हैं।
अक्षय पद को पाने हेतू, गुरु चरणों में आए हैं।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु हम, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठिभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम कलंक पंक में फँसकर, जीवन कई नशाए हैं।
मदन पराजय करने हेतू, पुष्प चढ़ाने आए हैं।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु हम, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी पेड़ा गूंजा आदिक, प्रासुक शुद्ध बनाए हैं।
क्षुधा वेदना नाशन हेतू, गुरु चरणों में आए हैं।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु हम, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन परिजन के मोह तिमिर में, कितने भव विनसाए हैं।
घृत कपूर के दीप जलाकर, तिमिर नशाने आये हैं।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु हम, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म शुभाशुभ किए निरंतर, उनका बंधन पाए हैं।
धूप दशांग जलाकर गुरुवर, बंध जलाने आए हैं।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु हम, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसा केला अरु नारंगी, श्री फल आदिक लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतु, गुरु के चरण चढ़ाए हैं।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु हम, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोहर, चुन-चुनकर अपनाए हैं।
अष्ट गुणों की सिद्धी हेतु हम, गुरु चरणों में लाए हैं।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु हम, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा– आचार्योपाध्याय साधु हैं, रत्नत्रय के कोष।
पुष्पाञ्जलि जिनके चरण, करते हम निर्दोष।।
।।इति द्वितिय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

हैं छत्तीस मूलगुण धारी, जैनाचार्य ऋषी गुणगान।
पञ्चाचार के धारी जग में, करते जन जन का कल्याण।।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, मोक्ष मार्ग के शुभ साधक।
चरण कमल की अर्चा करने, खड़े चरण में आराधक।।

सम्यक् चारित पाने का शुभ, भाव बनाकर आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।11।।
ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पच्चिस मूलगुणों के धारी, उपाध्याय ऋषिवर गुणवान।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, ज्ञाता होते संत महान।।
ऋषि मुनि यति अनगार सभी को, करते सम्यक् ज्ञान प्रदान।
तत्व बोध देकर जीवों को, करते हैं जो जन कल्याण।।
मुनि के मूल गुणों का पालन, करते विशद भाव के साथ।
ऐसे पावन ऋषि के चरणों, झुका रहे हम अपना माथ।।2।।
ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च महाव्रत समिति पाँच अरु, होते पञ्चेन्द्रिय जयवान।
षट् आवश्यक पालन करते, शेष सप्तगुण धर गुणवान।।
अट्ठाइस मूलगुणों का पालन, करने वाले संत महान।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण तप, से करते कर्मों की हान।।
रत्नत्रय को पाकर हम भी, करें कर्म का पूर्ण विनाश।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सिद्ध शिला पर पावें वास।।3।।
ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

आचार्योपाध्याय सर्व साधु जी, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।
सम्यक् चारित पालन करके, करते अपने कर्म शमन।।
वीतराग चारित के धारी, श्रेष्ठ समाधी करें वरण।
जिन अरहंत सिद्ध जिनवाणी, की जो पावें श्रेष्ठ शरण।।
बनकर ऋषियों के पथगामी, पाएँ दर्शन ज्ञान चरण।
विशद भावना यही हमारी, होय समाधी सहित मरण।।
ॐ ह्रीं श्री चारित्र शिरोमणि आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– रत्नत्रय धारी विशद, ऋषिवर हों जयवन्त।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव का अंत।।

(शम्भू छन्द)

पञ्चाचार का पालन करने, वाले गुरू कहाए हैं।
परमेष्ठी आचार्य लोक में, परम पूज्यता पाए हैं।।
परम हितैषी गुरुवर तुमको, अब तक कभी ना ध्याया है।
दर्श किया नयनों से लेकिन, श्रद्धा में ना लाया है।।1।।
हुआ तीव्र मिथ्यात्व उदय तो, गुरु चरणों से दूर रहा।
संतो का उपदेश न भाया, मिथ्या मद से पूर रहा।।
पाप कर्म में लीन रहा अरु, निज स्वभाव को बिसराया।
इसीलिए गुरुवर अनादि से, भवसागर में भरमाया।।2।।
आज आपके दर्शन करके, मैंने निज दर्शन पाया।
परम इष्ट चैतन्य ज्ञान धन, का बहुमान हृदय आया।।
पच्चिस मूलगुणों के धारी, उपाध्याय कहलाते हैं।
मुनियों के जो शिक्षा गुरु हैं, सबको ज्ञान सिखाते हैं।।3।।
अर्चा करके उपाध्याय की, प्राणी पुण्य कमाते हैं।
भव्य जीव वह मुक्ती पथ के, पथिक शीघ्र बन जाते हैं।।
निज वाणी से कुछ ना कहते, जिनवाणी रस पिया करें।
निज आतम से चर्चा करते, प्रतिक्रमण में जिया करें।।4।।
रहे अचेतन तन में लेकिन, कायोत्सर्ग में लीन रहे।
मेरू सम निश्चल रहकर मुनि, प्रत्याख्यान स्वाधीन रहे।।
दो आशीष मुझे हे गुरुवर, विशद सिंधु हे दया निधान।
स्व पर विवेक जगे अंतर में, रत्नत्रय का दो शुभ दान।।5।।
सम्यक् रत्नत्रय के धारी, सर्व साधु कहलाते हैं।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, आतम ध्यान लगाते हैं।।
षट् आवश्यक पालक गुरुवर, मेरा भी पालन करिये।
हूँ अबोध मम बाँह गहो गुरु, मुक्ती पुरी संग ले चलिए।।6।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु जी, कलीकाल के हैं भगवान।

मोक्ष मार्ग पर बढ़ने वाले, पाएँगे जो पद निर्वाण।।
भाव सहित जिनकी अर्चाकर, शुभ सौभाग्य जगाना है।
'विशद' मोक्ष का राही बनकर, हमको शिव पद पाना है।।7।।
दोहा–परमेष्ठी तुम हो गुरू, नमन करो स्वीकार।
वीतरागता उर भरो, कर दो भव से पार।।

ॐ ह्रीं चारित्र शिरोमणि श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित्र शुद्धि पूजा

स्थापना

निरतिचार चारित का पालन, करने का उर भाव जगे।
जिन चरणों की पूजा भक्ती, में मन मेरा नित्य लगे।।
बारह सौ चौंतिस बतलाए, चारित शुद्धि के उपवास।
अष्ट द्रव्य से पूजा करने, वालों की हो पूरी आस।।
दोहा–चारित शुद्धी व्रत कहा, जग में महति महान।
विशद हृदय में कर रहे, व्रत का हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

मिथ्या दर्शन के वश होकर, चतुर्गती में किया भ्रमण।
इस संसार दशा को लखकर, पाने आये सदाचरण।।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, सम्यक् चारित हो सम्प्राप्त।
कर्म नाशकर अपने सारे, बन जाएँ प्रभु हम भी आप्त।।1।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल भ्राँति को क्षयकर के हम, प्राप्त करें सम्यक् श्रद्धान।
संशय आदिक दोष नाशकर, पायें हम भी सम्यक् ज्ञान।।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, सम्यक् चारित हो सम्प्राप्त।
कर्म नाशकर अपने सारे, बन जाएँ प्रभु हम भी आप्त।।2।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी की शरण प्राप्त कर, समीचीन सन्मार्ग मिले।
सर्वोदय का वृक्ष फले प्रभु, आत्म ज्ञान का दीप जले।।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, सम्यक् चारित हो सम्प्राप्त।
कर्म नाशकर अपने सारे, बन जाएँ प्रभु हम भी आप्त।।3।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, समता रस का हो रस पान।
काम बाण की व्याधी नाशें, सम्यक् चारित धर गुणवान।।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, सम्यक् चारित हो सम्प्राप्त।
कर्म नाशकर अपने सारे, बन जाएँ प्रभु हम भी आप्त।।4।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय कामबाणविध्वसंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्य विषय सम्बन्ध तोड़कर, राग द्वेष का करें हनन।
होय लीनता निज गुण में तो, क्षुधा रोग का होय शमन।।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, सम्यक् चारित हो सम्प्राप्त।
कर्म नाशकर अपने सारे, बन जाएँ प्रभु हम भी आप्त।।5।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप को जान न पाया, विषयों में बढ़ने से राग।
ज्ञान द्वीप का हो प्रकाश जब, जिन पद से जागे अनुराग।।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, सम्यक् चारित हो सम्प्राप्त।
कर्म नाशकर अपने सारे, बन जाएँ प्रभु हम भी आप्त।।6।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चार लब्धियाँ प्रथम प्राप्त कर, जग में भटके हैं बहु बार।
नाथ! आपका दर्शन पाया, करणलब्धि पाई इस बार।।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, सम्यक् चारित हो सम्प्राप्त।
कर्म नाशकर अपने सारे, बन जाएँ प्रभु हम भी आप्त।।7।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानामृत की वर्षा पाई, नाथ! आपके आके द्वार।
सम्यक् राह मिली है हमको, हुआ आत्मा का उद्धार।।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, सम्यक् चारित हो सम्प्राप्त।
कर्म नाशकर अपने सारे, बन जाएँ प्रभु हम भी आप्त।।8।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में भटके राही को, बने सहारा हे प्रभु! आप।
जन्म जन्म के कट जाते हैं, जिनवर का करने से जाप।।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, सम्यक् चारित हो सम्प्राप्त।
कर्म नाशकर अपने सारे, बन जाएँ प्रभु हम भी आप्त।।9।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नाथ आपके भक्त हम, कर दो शांति प्रदान।
शांतीधारा दे रहे, पाने शिव सोपान।।
।।शान्तये शान्तिधारा।।

पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, करने निज कल्याण।
यही भावना है विशद, रहे आपका ध्यान।।
(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पूर्णार्घ्य

काल अनादी से आतम में, कालुषता लाते हैं कर्म।
इनको क्षय करने का साधन, कहा गया है उत्तम धर्म।।

मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, भेद ज्ञान दाता श्रद्धान।
सम्यक् ज्ञान जगाकर पाएँ, सम्यक् चारित महति महान।।
सम्यक् तप भी साथ रहे तो, कर्म निर्जरा होय अपार।
वीतराग चारित के धारी, समता धर बनते अनगार।।
सर्व कषायों का क्षय करके, करें घातिया कर्म विनाश।
अर्हत् पदधारी करते है, कर्म नाशकर शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– चारित शुद्धी हो विशद, पा सम्यक् आचार।
जयमाला गाते यहाँ, पाने पद अनगार।।
(रेखता छन्द)

रहा यह काल अनादी अनन्त, भ्रमण करते हैं जग में जीव।
प्राप्त करके मिथ्या अज्ञान, कर्म का करते बन्ध अतीव।।
भटकते हैं वह तीनों लोक, जन्मते मरते बारम्बार।
सहन करते हैं दुःख अनेक, नहीं दिखता है जिसका पार।।1।।
उदय में आवे पुण्य अपूर्व, मिले जिन मुद्रा का शुभ दर्श।
जगे अन्तर में सद् श्रद्धान, बने तब जीवन यह आदर्श।।
ज्ञान का पाके अनुपम कोष, करे यह मानव निज पहिचान।
प्राप्त करके सम्यक् चारित्र, करे निज आतम का शुभ ध्यान।।2।।
सुतप से कर्मों को कर क्षीण, प्राप्त हो अनुपम केवलज्ञान।
हुए हैं तीर्थंकर चौबीस, करे यह जग उनका गुणगान।।
घातिया करके कर्म विनाश, बने केवल ज्ञानी जिन संत।
नाश कर त्रेसठ प्रकृति जिनेश, चतुष्टय पाते प्रभू अनन्त।।3।।
कर्म का करने वाले अन्त, सिद्ध पद पाते हैं शुभकार।
सौख्य पाते हैं प्रभू अनन्त, पूर्णतः हो जाते अविकार।।
चारित फल के स्वामी जिनदेव, कहे अर्हत् जिन सिद्ध महान।
बताने वाले शिव का मार्ग, करें हम श्री जिनका गुणगान।।4।।
कहे हैं परमेष्ठी आचार्य, पालने वाले पंचाचार।

मूलगुण पच्चिस धारी संत, उपाध्याय कहलाए अनगार।।
साधु हैं रत्नत्रय के कोष, करें जो निज आतम का ध्यान।
मोक्ष पथ के राही जिन संत, प्राप्त करते हैं पद निर्वाण।।5।।
प्राप्त हो सम्यक् चारित शुद्ध, अतः चारित शुद्धी व्रतवान।
करें व्रत भाव शुद्धि के साथ, करें निज आतम का कल्याण।।
बारह सौ चौतिस हैं उपवास, सुव्रत के करते हैं जग जीव।
मोक्ष में कारण जो पाथेय, प्राप्त वह होता पुण्य अतीव।।6।।
हृदय में जागे मेरे भाव, करें हम निज आतम का ध्यान।
प्राप्त कर तेरह विध चारित्र, जगाएँ वीतराग विज्ञान।।
जगे ना पर वस्तु में राग, चेतना में लागे मम चित्त।
‘विशद’ हो संयम का फल प्राप्त, बने यह जीवन परम पवित्र।।7।।
दोहा– सम्यक् चारित शुद्धि व्रत, है शिव का सोपान।
धारण करके हम विशद, पाएँ पद निर्वाण।।
ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भाते हैं हम भावना, शिवपुर में हो वास।
नाथ! आपकी भक्ति से, पूरी हो मम आस।।
(इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

त्रयोदश विधि चारित्र व्रत के 1234 व्रतोपवास के अर्घ्य

परम श्रेष्ठ व्रत कहा लोक में, चारित शुद्धी है शुभ नाम।
बाहर सौ चौंतिस व्रत इसके, जिनका करते हम गुणगान।।
भेद सहित वर्णन करते हम, करके आतम का कल्याण।
तेरह विधि चारित को पाकर, पाना है अब पद निर्वाण।।
दोहा– चारित्र शुद्धि विधान है, मंगलमयी विधान।
पुष्पांजलि करते विशद, करने को गुणगान।।

(इति तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

‘‘पाँच महाव्रतों के अर्घ्य’’

(वीर छन्द)

एक सौ छब्बिस परम अहिंसा, व्रत के गाये हैं उपवास।
विशद भाव से करने वाले, करते हैं निज गुण में वास।।
परम अहिंसाव्रत का पालन, करें भाव से हे भगवान!।
चारित शुद्धी पाकर हम भी, पाएँ अतिशय पद निर्वाण।।1।।
ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रत समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बतलाए उपवास बहत्तर, सत्य महाव्रत के शुभकार।
जिनका पालन करने वालों, का जीवन हो मंगलकार।।
सत्य महाव्रत का पालन शुभ, करें भाव से हे भगवान!।
चारित्र शुद्धी पाकर हम भी, पाएँ अतिशय पद निर्वाण।।2।।
ॐ ह्रीं सत्य महाव्रत समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहे बहत्तर व्रताचौर्य के, उपवासों का श्रेष्ठ कथन।
परभावों का त्याग स्वयं के, गुण में पाएँ श्रेष्ठ रमण।।
व्रताचौर्य का पालन हम भी, करें भाव से हे भगवान!।
चारित शुद्धि पाकर हम भी, पाए अतिशय पद निर्वाण।।3।।
ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रत समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक सौ अस्सी ब्रह्मचर्य व्रत, के पालन करके उपवास।
महाशील के स्वामी होकर, करना है शिवपुर में वास।।
ब्रह्मचर्य व्रत का पालन हम, करें भाव से हे भगवान!।
चारित्र शुद्धी पाकर हम भी, पाएँ अतिशय पद निर्वाण।।4।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रत समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दो सौ सोलह रहे अपरिग्रह, व्रत के मंगलमय उपवास।
ब्राह्यभ्यन्तर परिग्रह तजकर, निज गुण में हो मेरा वास।।
अपरिग्रही हो निज आतम में, रमण होय मेरा भगवान!।
चारित्र शुद्धी पाकर हम भी, पाएँ अतिशय पद निर्वाण।।5।।
ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रत समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रात्री भोजन त्याग अणुव्रत, का पालन हो भली प्रकार।
मन वच तन कृत कारित मोदन, नव कोटी से हो परिहार।।
रात्री भोजन सुव्रत के, बतलाए हैं दश उपवास।
व्रत का पालन करने से हो, भवि जीवों की पूरी आस।
खाद्य स्वाद अरू लेहय पेय चउ, विधि भोजन का करके त्याग।
काल अनादि लगी हमारी, बुझ जाए कर्मों की आग।।6
ॐ ह्रीं रात्रि भोजन त्याग व्रत समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

मुनिवर पञ्च महाव्रत धारी, रात्री भोजन करते त्याग।
छठा अणुव्रत पालन करते, धर्म से है जिनको अनुराग।।
चारित शुद्धि व्रत की पूजा, करने वाले जग के जीव।
मोक्ष मार्ग के राही बनते, प्राप्त करे जो पुण्य अतीव।।
ॐ ह्रीं पञ्च महाव्रत समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''पाँच समीति के अर्घ्य''

दोहा– रक्षा जीवों की करें, पञ्च समीती वान।
यत्नाचारी हो सदा, करते निज कल्याण।।
(इति चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

शम्भू छन्द

चार हाथ भूमी को लखकर, चलना ईर्या समिति कहा।
जीवों की रक्षा हो जिससे, धर्म का पालन होय अहा।।
नौ उपवास बताए व्रत के, जिससे हो चारित्र विशुद्ध।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, करने को निज आतम शुद्ध।।1।।
ॐ ह्रीं ईर्यासमिति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हित मित प्रिय वचनों की वृत्ती, भाषा समिति कही शुभकार।
नब्बे हैं उपवास सुव्रत के, पालन करें श्रेष्ठ नर नार।।

मौन रहें पर कटु ना बोलें, भाषा समिति धारी गुणवान।
व्रत पालन कर मोक्ष मार्ग पर, बढ़के पाते पद निर्वाण।।2।।
ॐ ह्रीं भाषा समिति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

देख शोधकर भोजन करना, समिति एषणा मंगलकार।
चार सौ चौदह व्रत बतलाए, पालन करते मुनि अनगार।
प्रासुक शुभ आहार ग्रहण कर, मुनिवर करते आतम ध्यान।
नित्य निरंजन कर्म निर्जरा, करके करते निज कल्याण।।3।।
ॐ ह्रीं एषणा समिति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समिति कही आदान निक्षेपण, जिसमें गाए नौ उपवास।
आदान निक्षेपण हो वस्तू का, यत्नाचार के द्वारा खास।।
जीवों की रक्षा हो जिसमें, रक्खा जाता पूरा ध्यान।
जिसके द्वारा संयम धारी, साधू करते निज कल्याण।।4।।
ॐ ह्रीं एषणा समिति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

देख शोधकर निर्जन्तुक भू, में करना मल का क्षेपण।
यह व्युत्सर्ग समिति शुभ गाई, दूजा नाम प्रतिष्ठापन।।
नौ उपवास कहे हैं जिसके, पालन करते हैं जिन संत।
निज आतम का ध्यान लगाकर, करते हैं कर्मों का अंत।।5।।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समिति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ईर्यादिक पाँचों समिति के, पाँच सौ इकतिस हैं उपवास।
भाव सहित व्रत के पालन से, जीवों की हो पूरी आस।।
सम्यक् चारित की शुद्धी से, मोक्ष मार्ग में होय गमन।
विशद भावना भाते हैं हम, कर्म पूर्णतः होय शमन।।6।।
ॐ ह्रीं पंच समिति प्ररूपक श्री सम्यक् चारित्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

''त्रय गुप्ति के अर्घ्य''

दोहा– त्रय गुप्ती को धारकर, पाएँ धर्म ध्यान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, करने निज कल्याण।।

(इति पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ताटंक छन्द

मनोगुप्ति में मन का गोपन, करते हैं मुनिवर अनगार।
निज आतम का ध्यान लगाकर, हो जाते हैं भव से पार॥
नौ उपवास कहे हैं व्रत के, धारण करने वाले जीव।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव॥1॥
ॐ ह्रीं मनोगुप्ति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं स्वाहा।

वचन गुप्ति के धारी मुनिवर, वचनों का करते परित्याग।
तन मन धन परिजन आदिक से, तजने वाले हैं जो राग॥
नौ उपवास वचन गुप्ती के, धारण करने वाले जीव।
मोक्ष मार्ग में कारण हैं जो, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव॥2॥
ॐ ह्रीं वचन गुप्ति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं स्वाहा।

हलन चलन को तजके मुनिवर, स्थिर होके करते ध्यान।
काय गुप्ति को धारण करके, करते निज आतम कल्याण॥
नौ उपवास काय गुप्ती के, धारण करने वाले जीव।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव॥3॥
ॐ ह्रीं काय गुप्ति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं स्वाहा।

तीन गुप्तियाँ पाने वाले, अविकारी होते मुनिराज।
मुक्ती पथ के राही बनते, पाने को शिवपुर का ताज॥
कर्म निर्जरा करते मुनिवर, करके निज आतम का ध्यान।
सर्वकर्म का नाश करें मुनि, पा लेते हैं पद निर्वाण॥4॥
ॐ ह्रीं तीन गुप्ति प्ररूपक श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

पञ्च महाव्रत का पालन कर, होते पञ्च समीतीवान।
तीन गुप्तियों के धारी मुनि, जग में होते हैं गुणवान॥
राग द्वेष मोहादि कषायों, का करते मुनिवर परिहार।
सर्व परिग्रह से विरहित मुनि, कहलाते हैं जो अनगार॥
तन चेतन का भेद ज्ञान कर, पाते हैं सम्यक् श्रद्धान।
संशय आदिक दोष रहित शुभ, प्राप्त करें मुनि सम्यक् ज्ञान॥

सम्यक् चारित पाने वाले, करते निज आतम का ध्यान।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सुपद प्राप्त करते निर्वाण॥
ॐ ह्रीं चारित शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
समुच्चय जाप्य–ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– काल अनादी जो कहा, मंगलमयी त्रिकाल।
सम्यक् चारित की विशद, गाते हैं जयमाल॥

(विष्णुपद छन्द)

काजल सम कालुषता लाने, वाले कर्म रहे।
दर्शन ज्ञानाचरण कर्म के, नाशक धर्म कहे॥
सम्यक् ज्ञान मोक्ष दर्शायक, इस जग में जानो।
पापों को तजने का कारण, सच्चारित मानो॥
संवर सहित सुतप से भाई, सारे कर्म जलें।
ध्यान योग से भवि जीवों के, सारे कर्म गलें॥
अध्रुव आदिक बारह भावन, भा वैराग्य जगे।
निज के चिन्तन में मानव का, जिससे चित्त लगे॥
सोलह कारण भव्य भावना, है मंगलकारी।
सम्यक् दृष्टी जिसको पाते, होके अविकारी॥
तीर्थंकर पद जिसका फल है, भाओ जीव अरे!।
वे बनते शिवपद के राही, जो श्रद्धान करे॥
पञ्च महाव्रत मूलधर्म के, बीजभूत गाए।
पञ्च समितियाँ पालन करके, गुण वृद्धी पाए॥
तीन गुप्तियों का गोपन यह, सच्चारित्र कहा।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतू, सेतु श्रेष्ठ रहा॥
अतीचार से रहित सुचारित, पालें जो प्राणी।
कर्म घातिया के नाशी वह, हों क्षायिक ज्ञानी॥
शिवपद के दाता बनते हैं, स्व-पर उपकारी।
'विशद' मोक्ष पदवी को पाते, शिव पद के धारी॥
अर्हत् सिद्ध हुए जो अब तक, सच्चारित पाए।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु भी, चारित अपनाए॥
संयम के धारी ही जग में, शिव पदवी पाते।

कर्म नाशकर के वह सारे, सिद्ध शिला जाते॥
हृदय भावना जगे हमारी, सद् संयम पाएँ।
व्रत का पालन करके जीवन, अपना महकाएँ॥
शरण प्राप्त हो नाथ आपकी, संयम 'विशद' मिले।
रत्नत्रय के रत्नाकर में, धर्म का फूल खिले॥

दोहा– भक्त भावना भा रहे, पूर्ण करो हे नाथ!।
जीवन मंगलमय बने, विशद निभाओ साथ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक त्रयोदश विधि चारित्र प्ररूपक श्री सम्यक् चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– आप हमारे देवता, शिव पद के दातार।
भव सिन्धू से नाव अब, प्रभू लगाओ पार॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आरती

(तर्ज-ॐ जय महावीर प्रभु...)

ॐ जय चारित्र धारी, स्वामी जय चारित्र धारी।
चारित शुद्धी पालें, मुनिवर अनगारी॥ ॐ जय चारित्रधरी...
परम अहिंसा धारें, मुनिवर अविकारी।
सत्य महाव्रत पाते, गुरु मंगलकारी॥ ॐ जय चारित्रधारी...
व्रताचौर्य पाते हैं, ब्रह्मचर्य धारी।
अपरिग्रही होते हैं, मुनि संयमधारी॥ ॐ जय चारित्रधारी...
रात्री भुक्ती अणुव्रत, के हैं परिहारी।
कृतकारित अनुमोदन, त्यागें योगधारी॥ ॐ जय चारित्रधारी...
ईर्या समिति भी पाते, भाषा समिति धारी।
ऐषणा समिति भी पालें, एक भुक्त धारी॥ ॐ जय चारित्रधारी...
आदान निक्षेपण समिति, व्युत्सर्ग समितिधारी।
तीन गुप्ति का गोपन, करते शिवकारी॥ ॐ जय चारित्रधारी...
हम भी चारित्रधारी, मुनिवर को ध्याते।
चारित्र पाने हेतू, चरणों सिरनाते॥ ॐ जय चारित्रधारी...
'विशद' आरती करने, आज यहाँ आये।
घृत के दीपक अनुपम, हमने प्रजलाये॥ ॐ जय चारित्रधारी...

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:-इह विधि मंगल आरती कीजे....)

बाजे छम-छम-छम छमा छम बाजे घूंघरू-2
हाथों में दीपक लेकर आरती करूँ-2॥ टेक॥
कुपी ग्राम में जन्म लिया हैं, इन्दर माँ को धन्य किया हैं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(1) बाजे छम-छम-छम...
गुरुवर आप है बालब्रह्मचारी, भरी जवानी में दीक्षाधारी
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(2) बाजे छम-छम-छम...
विराग सागर जी से दीक्षा पाई, भरत सागर जी के तुम अनुयायीं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(3) बाजे छम-छम-छम...
विशद सागर जी गुरुवर हमारे, छत्तीस मूलगुणों को धारे
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(4) बाजे छम-छम-छम...
संघ सहित गुरु आप पधारे, हम सबके यहाँ मन हर्षायें
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(5) बाजे छम-छम-छम...

प्रशस्ति

¬ue%fl)sH;%Jhewyla?ksdbµndbµnhkEuk;scykRdkjx.kslsuxPNs uUrhla?kL;ijEijk;kaJhvkfnlkxjkpk;ZtkrkLrr~f'k";%Jhegkohj dhfrZvkpk;ZtkrkLrr~f'k";k%JhfoeylkxjkPk;kZtkrkLrrf'k"; JhHkjrlkxjkpk;ZJhfojkxlkxjkpk;kZtkrkLrr~f'k";vkpk;Z fo'knlkxjkpk;ZtEcw}hisHkjr{ks=ksvk;Z[k.MsHkkjrns'ksgfj;k.kkizkUrs ukjukSyukeuxjsfLFkr1008Jh'kkfUrukFkvfr'k;{ks=keè;svoljs fudkZ.klEor~2540fo-la-2071pSrekls'kqDyi{ksiapeh'kfudkljs pkfj=k'kqf)foèkkujpuklekfIrbfr'kqHkaHkw;kr~A

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. चारित्र शुद्धि विधान
115. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
116. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
117. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
118. दिव्यध्वनि विधान
119. षट्खण्डागम विधान
120. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ती संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिंदगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ती के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. शुभषितरत्नावली
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग-3
139. नैतिक शिक्षा भाग-1, 2, 3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग-1
143. चिंतवन सरोवर भाग-2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग-1
148. मूक उपदेश भाग-2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ती पीयूष
153. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
154. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट : उपरोक्त 120 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्याभव करें। –मुनि विशालसागर